ओमशांति। यूं सतगुरूवार तो बच्चों के लिए रोज़ ही है। यह तो सिर्फ दिनों के नाम रखे गए हैं। नहीं तो वृक्षपति जिसको बृहस्पत की दशा कहते हैं वह ब्राह्मण बच्चों पर तो है ही। वह दशा है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। आजकल बच्चे शिवजयंति मनाने के लिए डायरैक्शन मांगते हैं, कार्ड छपवाते हैं उसमें क्या लिखें? कई तो आपे ही लिखते हैं। जो पूरा नहीं जानते लिखना वह पूछते हैं कि कैसे कार्ड छपवा बांटें जायें? बाप ने समझाया तो बहुत बारी है। सारी मुख्य बात है गीता पर। मनुष्यों की बनाई हुई गीता से तो आधा कल्प पढ़ते2 दुर्गति को पाया है। यह भी तुम बच्चे ही समझते हो। दूसरा कोई समझते नहीं कि इससे दुर्गति को पाया है। बच्चों को समझाया है गीतायें हैं दो। ज्ञान और भक्ति। आधा कल्प है भक्ति की गीता। आधा कल्प दिन ,आधा कल्प रात। अभी बाबा ऐसे देते हैं उनको शॉर्ट कर लिखना पड़े। भाइयों और बहिनों आकर समझो। एक गीता शास्त्र है ज्ञान का और बाकी सभी शास्त्र हैं भक्तिमार्ग के। ज्ञान का शास्त्र एक ही है जो पुरुषोत्तम संगमयुग पर बेहद का बाप परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव सुनाते हैं या तो लिखना चाहिए ब्रह्मा द्वारा सुनाय रहे हैं जिससे 21जन्म सदगति होती है। बाकी है दुर्गति के शास्त्र। ज्ञान की गीता से 21जन्म सदगति मिलती है। फिर 63जन्म भक्ति की गीता चलती है जो कि मनुष्यों की बनाई हुई है। बाप तो राजयोग सिखला कर सदगति करते हैं। फिर सुनने की दरकार ही नहीं रहती। मनुष्यों की बनाई हुई गीता तो द्वापर से पढ़ते ही आते हैं। सदगति है दिन। दुर्गति है रात। दुर्गति होते2 बिल्कुल घोर–अंधियारा हो जाता है। वह ज्ञान की गीता ,वह भक्ति की गीता। वह सुनाते हैं परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव ज्ञान सागर और वह भक्ति की गीता सुनाते हैं जो भक्ति के सागर हैं। भक्ति मार्ग की गीता मनुष्य सुनाते हैं। अभी भी बनाते रहते हैं। बहुत गीताएं हैं। वह है भक्तिमार्ग के दुर्गति के अर्थात् रात की। यह ज्ञान की गीता जिससे दिन होता है। ज्ञान की गीता एक ही ज्ञान सागर सुनाते हैं, जिससे 21जन्म सदगति होती है अथवा 100प्रतिशत पवित्रता ,सुख,शांति का अटल ,अखंड सतयुगी दैवी स्वराज्य मिलता है 21जन्म लिए अर्थात् चढ़ती कला होती है। मनुष्यों की भक्ति की गीता से उतरती कला होती है। भक्ति के गीता और ज्ञान की गीता। इस पर अच्छी तरह से विचार–सागर–मंथन कर लिखना पड़े। यह मूल बात है जो मनुष्य नहीं जानते हैं और तुम लिखते भी हो त्रिमूर्ति शिवजयंती सो श्रीमद्भगवद् गीता जयंति सो सर्व की सदगति भवंति। यह भी लिख सकते हो। 32वीं शिवजयंती ,विश्व में शांति भवंति। मुख्य2 अक्षर बहुत जरूरी है। जिस पर सारा मदार है। वह है मनुष्यों की भक्तिमार्ग की गीता, जो कि द्वापर से कलियुग तक अध्ययन किया जाता है, जिससे पतन होता है। ऐसा क्लीयर लिखना चाहिए जो मनुष्य झट समझ जावे। है ही गीता से उत्थान और पतन। भक्तिमार्ग की भी सर्वशास्त्रई शिरोमणी गीता है और ज्ञान मार्ग की भी सर्व शास्त्रमई गीता है। और कोई भी शास्त्र ज्ञानमार्ग के होते नहीं। वह सब हैं भक्तिमार्ग के। गीता, वेद,शास्त्र आदि जो भी हैं मनुष्यों की बनाई हुई है। उससे दुर्गति ही होती आई है और पुरुषोत्तम संगमयुग पर जो बाप राजयोग और ज्ञान सिखलाते हैं उससे 21जन्म बेहद का अटल ,अखण्ड .....अब यह लिखकर रिफाइन करने में भी टाइम लगता है। फिर नीचे में लिखना चाहिए निवृत्तिमार्ग वाले सन्यासी कब राजयोग सिखला न सके। यह दूसरी प्वाइंट है ,जो कनेक्शन रखती है। हठयोगी ,सन्यासी ,शास्त्रों आदि से सदगति कर नहीं सकते। गीता ,वेद,शास्त्र,उपनिषद आदि जो भी हैं उससे दुर्गति होती है। अब यह लिखते बनाने में भी कम से कम 2/3 घंटा मेहनत करनी पड़े और यह भी लिख सकते हो सदगति एक ही गीता का भगवान कर सकते हैं। मनुष्य मनुष्य की सदगति कर नहीं सकते। भगवान सदगति करने आते भी हैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर। अभी कर रहे हैं। यह मुख्य दो/तीन प्वाइंट डाले तो भी बहुत है। शिव और कृष्ण की गीता का कान्ट्रास्ट तो है। त्रिमूर्ति का चित्र भी हो। त्रिमूर्ति का चित्र कार्ड में लगा देना चाहिए। अगर ब्लॉक न हो तो ऐसे ही लिख देना चाहिए।

त्रिमूर्ति शिव भगवान से संगम पर गीता सुनने से सदगति होती है। कृष्ण तो सुनाई नहीं है। ऐसे2 प्वाइंट पर जब कोई विचार–सागर–मंथन करे तब ही लिख सके। मनुष्य मनुष्य की सदगति कदाचित नहीं कर सकते हैं। सिर्फ एक ही त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव जो कि टीचर भी है ,गुरू भी है। अब इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर सर्व की सदगति कर रहे हैं। कार्ड में थोड़ी लिखते ही बस हैं। उपर में लिख देना चाहिए ''कलियुगी कौड़ी जैसे पतित मनुष्य से सतयुगी हीरे जैसा पावन देवता बनने का ईश्वरीय निमंत्रण।'' ऐसे2 लिखने से मनुष्य खुशी से आवेंगे समझने लिए। सदगति दाता बाप की शिवजयंति मनाई जाती है। एकदम क्लीयर अक्षर हो और तंत। मनुष्य तो भक्तिमार्ग के कितने ढेर शास्त्र पढ़ते हैं। माथा मारते रहते हैं। यहां तुमको सेकेंड में बेहद के बाप से जीवनमुक्ति मिलती है। जो बाप का बन और उससे नालेज लेते हैं उनको जीवनमुक्ति जरूर मिलेगी। मुक्ति में जाकर जब फिर समय आवेगा ,जैसा2 पुरुषार्थ किया होगा ऐसे ही जीवनमुक्ति में आवेंगे। जीवनमुक्ति तो जरूर मिलती है। शुरू में आवे वा पिछाड़ी में आवे तो भी जीवनमुक्ति जरूर मिलती है। पहले जीवनमुक्ति फिर जीवनबंध। तो ऐसे2 बातें अगर धारण कर ले तो भी बहुत सर्विस हो सकती है। कोई2 को निमंत्रण बहुत अच्छा मिलता है। बच्चियां लिखती हैं हमको बहुत अच्छा रिफ्रेश करके गई हो, फिर आकर रिफ्रेश करो। बुलावा होता है फिर भी अगर न जाये तो उनको कहा जाता है महान कम्बखत। सर्विस तो करनी चाहिए ना। सर्विस नहीं करते तो कम्बखत नहीं कहेंगे। उंच दर्जा पाना है तो कुछ समझ धारण करनी चाहिए। एकदम बेसमझ नहीं बनना है। जाकर बहुतों का कल्याण करना चाहिए। बाकी सारा दिन खाते–पीते ,सोते तो जनावर भी हैं। इस समय बाप आकर जनावर से देवता बनाते हैं। अगर बेहद के बाप को न जाने तो उनको जनावर ही कहेंगे। जनावर से भी बदतर कहा जाता है। अगर बाप को जानते हैं तो दूसरों को भी परिचय देना चाहिए। किसको परिचय नहीं देते हैं तो ज्ञान ही नहीं है। जैसे जनावर मिसल है। समझानी तो बहुत दी जाती है ;परंतु तकदीर में नहीं है। कल्याणकारी बाप के बच्चे हैं तो कल्याण करना चाहिए ना। नहीं तो बाप भी कहेंगे यह तो कहने मात्र कहते हैं कि हम शिवबाबा के बच्चे हैं। कल्याण तो करते नहीं। साहुकार या गरीब कल्याण तो सबका करना है ना ; परंतु पहले गरीब ही उठावेंगे। उन्हों को फुर्सत है। ड्रामा में पार्ट ही ऐसा बना हुआ है। साहुकार अभी आ जावें तो उनके पिछाड़ी ढेर आ जायें। देखेंगे यह भी कहते हैं गीता का भगवान निराकार भगवान शिव है न कि श्रीकृष्ण। एक भगवान ही सदगति दाता है। तो फिर आकर पूंछ लटकावेंगे। अभी ही अगर महिमा निकले तो पता नहीं क्या हो (जो) बात मत पूछो। तुम तो सन्यासियों बड़े2 मर्तबे वालों को हिलाते हो ;क्योंकि तुम्हारी है ईश्वरीय मर्तबा। उन्हों का मर्तबा क्या है? कुछ भी नहीं। जो अच्छी रीत समझते हैं वह अपना भी तो दूसरों का भी कल्याण करते हैं। जो अपना ही कल्याण नहीं करते तो दूसरों का कदाचित नहीं कर सकते। बाप तो अच्छी रीत समझाते हैं ;परंतु कोई को यह रत्न भी मिर्ची हो लगती है। बाप है कल्याणकारी ,सर्व की सदगति दाता। तुम भी मददगार हो ना। अभी तुम समझते हो वह है भक्तिमार्ग की दशा। सदगतिमार्ग की दशा एक ही है। वह महारथी कहेंगे। अपने दिल से पूछना चाहिए हम महारथी हैं, फलाने मिसल सर्विस करते हैं, प्यादें कब किसको ज्ञान सुनाय न सके। कोई का कल्याण ही नहीं करते तो कल्याणकारी बाप के बच्चा क्यों कहलाना चाहिए? बाप तो पुरुषार्थ करावेंगे ना। ठंडा थोड़े ही छोड़ेंगे। नहीं तो और डिससर्विस करेंगे। यज्ञ की सर्विस में तो हड्डियां भी स्वाहा कर देनी चाहिए। बाकी सिर्फ खाना–पीना ,सोना वह सर्विस हुई क्या? समझना चाहिए हम जाय प्रजा में या राजाई में दास–दासी बनेंगे। बाप तो कहते हैं पुरुषार्थ कर नर से नारायण बनो। सपूत

बच्चों को देख बाप भी खुश होंगे ना। यह तो बड़ा सपूत बच्चा है। लौकिक बाप भी देखते हैं यह तो बड़ा मर्तबा पाने लायक है तो देखकर खुश होंगे। पारलौकिक बाप भी ऐ ही कहते हैं। बाप बच्चों को अगर न सुधारे तो कहेंगे ना तुम्हारा तो कोई धणी–धोनी है वा नहीं? बेहद का बाप कहते हैं हम तो तुमको विश्व का मालिक बनाने आये हैं। अब तुम औरों को भी बनाओ। बाकी सिर्फ पेट की पूजा करने से फायदा ही क्या होगा? सिर्फ यह बताओ शिवबाबा को याद करो। भोजन पर भी एक/दो को शिवबाबा की याद दिलाते रहेंगे तो सभी कहेंगे इनको तो शिवबाबा से बहुत ही प्रीत है। यह तो सहज है ना। इसमें क्या नुकसान है। टेव पड़ जावेगी तो खाते भी रहेंगे ,अध्ययन भी करते रहेंगे। दैवीगुण धारण करना चाहिए ना। बाप, टीचर,गुरू का काम है शिक्षा देना। और तो कुछ भी नहीं करते। गायन भी है मारो, चाहे प्यार करो..... शिवबाबा इस तन से ही कहेंगे ना। वह तो है गुप्त। इनका भी अदब रखना पड़ेना। इस समय है कलियुगी पतित कौड़ी मिसल दुर्गति को पाये हुए हैं। सभी पुकारते भी हैं हे पतित–पावन आओ। तो जरूर पतित हैं ना। शंकराचार्य भी शिव की पूजा करते हैं ;क्योंकि वही पतित–पावन है। आधा कल्प भक्ति करते हैं फिर भगवान आते हैं। कोई को हिसाब का थोड़े ही पता है। बाप समझाते हैं भक्ति है दुर्गति। यज्ञ–तप–दान आदि करने से मैं नहीं मिलता हूं। इसमें गीता भी आ जाती है। इन शास्त्रों पढ़ने से कोई की सदगति नहीं होती है। गीता, वेद,उपनिषद आदि सब हैं भक्तिमार्ग के। बाप तो सदगति के लिए बच्चों को सहज राजयोग और ज्ञान सिखलाते हैं, जिससे राजाई प्राप्त कराते हैं। इनका (नाम) ही है राजयोग। मनुष्य से देवता बनाते हैं। इसमें पुस्तक आदि की बात नहीं। टीचर स्टडी कराते हैं। पद प्राप्त कराने लिए। तो फालो करना चाहिए ना। सबको बोलो शिवबाबा को याद करो। वह हम सभी आत्माओं का बाप है। शिवबाबा को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। एक/दो को सावधान कर उन्नति को पाना है। जितना याद करेंगे उतना अपना कल्याण है। याद की यात्रा ही सारी विश्व को पवित्र बनायेगी। याद में रहे भोजन बनाओ तो उसमें भी ताकत आ जावेगी। इसलिए तुम्हारी ब्रह्मा भोजन की महिमा है। ऐसा भोजन शायद पिछाड़ी में मिलेगा। जैसे बाबा कहते हैं शिवबाबा को याद कर भोजन बनाओ। यह भक्त लोग भोजन बनाते हैं तो भी राम–राम कहते रहते हैं। राम नाम का दान देते हैं। तुमको तो बुद्धि में यह घड़ी2 याद रहनी चाहिए। बुद्धि में सारा ज्ञान याद रहना चाहिए। बाप के पास सारी रचना के आदि,मध्य,अंत का ज्ञान है ना। उंच ते उंच भगवान। उनको याद करेंगे तो उंच पद पावेंगे। फिर दूसरे किसको याद ही क्यों करें? बाप कहते हैं मुझे याद करो। तो दूसरी सब छोड़नी पड़े। यह है अव्यभिचारी योग। बाप ने समझाया है अगर याद नही पड़ती है तो गांठ बांध लो। अपनी उन्नति करने लिए ,उंच पद पाने लिए पुरुषार्थ जरूर करना है। टीचर है एक। हमको टीचर बनाने वाला शिवबाबा। तुम पण्डे हो ना। पण्डों का काम है रास्ता बताना। नहीं तो पण्डे नहीं लुण्डे ठहरे। उनको ब्राह्मण भी नहीं कहेंगे। शूद्र के शूद्र ही ठहरे। इतना सारा ज्ञान पहले थोड़े ही तुम्हारे में था। ऐसे बहुत कहते हैं आगे तो जैसे पाई–पैसे की पढ़ाई थी। सो तो जरूर होगा ना। ड्रामा अनुसार कल्प पहले मिसल पढ़ते रहते हैं। फिर कल्प बाद भी ऐसे ही पढ़ेंगे। रोज बाबा समझाते रहते हैं ; परंतु अगर छेद होगा तो सभी बह जावेंगे। जरा भी दान न दे सकेंगे। निमंत्रण आता है तो फौरन भागना चाहिए। इसमें तो पूछना भी नहीं चाहिए ; परंतु तकदीर ही में न है तो क्या कर सकते हैं? पिछाड़ी में सब तुमको सा. होंगे। सा. होने में देरी थोड़े ही लगती है। बाबा को भी फट से सा. होते गए फलाना राजा बनेगा, यह ड्रेस होगा। शुरू में बहुत सा. होते थे। फिर पिछाड़ी में बहुत होंगे। फिर याद करेंगे। बाबा भी कहेंगे तुमको कितना समझाते थे। है तो ड्रामा। फिर भी सावधान किया जाता है। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बापदादा का यादप्यार गुडमार्निंग। रुहानी बच्चों को नमस्ते।